



Roti Ka Ehtiram (Hindi)

इस्लाम विद्या : 275  
Weekly Booklet : 275

अमीर अहले सुन्नत أهل السنة والجماعة की फ़िराय “फैयाने सुन्नत” की  
एक किस्त मअ तर्मीम व इयाफ़ “बयाम”

पृष्ठान 17

# रोटी का एहतिराम

क्या रोटी लफ़ा का खाना शुन्नत है ? 08

11 रोटी अहली की फ़ायदा

अल्लामा की कब्र ख़ुली से  
खाने का शुन्नत 14

14 लफ़ा का ख़ुली का ख़ेदीये



शेख़े सौफ़र, अमीर अहले सुन्नत, बरिसे या'को इलाहो, इराने अल्लामा मोलाना अयु किराल

**मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी**

مؤلف  
مؤلف

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط  
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शौखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा  
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये  
 إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी  
 रहमत नाज़िल फ़रमा! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مُسْتَعْرِفٌ ج ١ ص ٤٠ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तुल्लिबे गुमे मदीना  
 व बकीअ  
 व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : रोटी का एहतिराम

सिने त़बाअत : रबीउल आखिर 1444 हि., नवम्बर 2022 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्लितजा : किसी और को यह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

## रोटी का एहतिराम

येह रिसाला (रोटी का एहतिराम)

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी)**

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,  
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

### क़ियामत के रोज़ हसरत

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

### किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط  
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़मून “फैजाने सुन्नत ” जिल्द अब्वल, सफ़हा 243 ता 262 से  
 लिया गया है ।

## रोटी का एहतिराम

**दुआए अत्तार :** या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला :  
 “रोटी का एहतिराम” पढ़ या सुन ले उसे बरकत वाली हलाल व आसान  
 रोज़ी अता फ़रमा और उस से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा ।

أَمِيْن بِجَاوِ حَاتَمِ التَّيْبِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :** बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे  
 क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे ।

(ترمذی، 27/2، حدیث: 484)

صَلُّوا عَلٰى الْحَبِيْبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर मुख़लिफ़ क़िस्म के खाने मसलन**  
 ज़र्दा, पुलाव और अचार वग़ैरा एक ही थाल में हों तो इस सूरत में दूसरी जानिब  
 से लेने की भी इजाज़त है चुनान्चे,

### मुख़लिफ़ खजूरों का थाल

हज़रते इक्राश رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के प्यारे रसूल,  
 रसूले मक़बूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में एक बरतन पेश किया गया जिस

में बहुत सा सरीद था। हम उस में से खाने लगे पस मैं अपना हाथ उस के कनारों में इधर उधर चलाने लगा तो सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, “ऐ इक्काश ! एक ही जगह से खाओ क्यूं कि येह एक ही (तरह का) खाना है।” फिर हमारे पास एक तबक़ लाया गया जिस में कई अक्साम की ताज़ा खजूरें थीं। हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हाथ मुबारक बरतन में हर तरफ़ तशरीफ़ ले जाने लगा और इर्शाद फ़रमाया, “ऐ इक्काश ! जहां से चाहो खाओ क्यूं कि येह (खजूरें) मुख़लिफ़ अक्साम की हैं।” (अबन माज, 4/15, हदीथ: 3274)

### पांच उंगलियों से खाना गंवारों का तरीका है

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये आख़िरुज्जमां, सरवरे जीशां, صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अंगूठे और शहादत की उंगली की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, “इन दो उंगलियों से मत खाओ (बल्कि इन के साथ बीच वाली मिला कर) तीन उंगलियों से खाओ कि येह सुन्नत है और पांच से मत खाओ कि येह गंवारों का तरीका है।” (क़ुत्बुल अमाल, 15/115, हदीथ: 40872)

### शैतान के खाने का तरीका

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है, “एक उंगली से खाना शैतान का और दो उंगलियों से खाना मुतकब्बरीन (या'नी मगरूर लोगों) का और तीन उंगलियों से खाना अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का तरीका है।” (जामि' सुवैय, 184, हदीथ: 3074)

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बा'ज अवकात चार मुबारक उंगलियों से भी खाना तनावुल फ़रमाते थे।

(जामि' सुवैय, 250, हदीथ: 6942 लुह्वा)

## तीन उंगलियों से खाने का तरीका

**घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो !** तीन उंगलियों से खाने से निवाला छोटा बनेगा, छोटा निवाला चबाना आसान रहेगा। जितना बेहतर तरीके पर चबाएंगे उतना ही मुंह से निकलने वाला हाज़िम लुआब उस में शामिल होगा और इस तरह खाना जल्दी हज़म होगा।

हज़रते अल्लामा अली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “पांच उंगलियों से खाना हरीसों की अलामत है।” (مرقات الفاتح، 9/8، تحت الحديث: 4164)

रोटी तीन उंगलियों से खाना ज़ियादा दुश्वार भी नहीं फ़क़त थोड़ी तवज्जोह की ज़रूरत है। अलबत्ता चावल तीन उंगलियों से खाना थोड़ा सा दुश्वार होता है मगर दीनी ज़ेहन रखने वाले अशिक़ाने सुन्नत के लिये यह भी कोई मुश्किल बात नहीं यकीनन सुन्नत ही में अज़मत है। बड़े निवालों की हिर्स में पांच उंगलियों से खाने के बजाए तरबियत की खातिर सीधे हाथ की बिन्सर (छुंगलिया के बराबर वाली उंगली) को ख़म कर के इस में रबड़ बेंड पहन लीजिये या रोटी का एक टुकड़ा छोटी उंगली और बिन्सर से हथेली की तरफ़ दबाए रखिये। अगर ज़ब्बा सादिक़ हुवा तो إِنَّ شَاءَ اللهُ तीन उंगलियों से खाने की आदत बन जाएगी। जब तीन उंगलियों से खाने की आदत हो जाए तो अब रबड़ बेंड और रोटी का टुकड़ा हथेली की तरफ़ दबाने की हाज़त नहीं। अगर चावल के दाने जुदा जुदा हों और तीन उंगलियों में उन का निवाला बन ही न पाता हो तो अब चार या पांच उंगलियों से खा लीजिये। मगर यह एहतियात ज़रूरी है कि हथेलियां आलूदा न हों बल्कि उंगलियां भी जड़ तक आलूदा न हों।

## चमचे के साथ खाने की हिकायत

छुरी कांटों और चमचों के साथ खाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। हमारे अस्लाफ़ चमचे के साथ खाने से परहेज़ करते थे क्यूं कि सरकारे मदीना

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से तीन उंगलियों के साथ खाना साबित है। हज़रते इमाम इब्राहीम बाजूरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “एक बार अब्बासी ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद के सामने चमचों के साथ खाना पेश किया गया, उस वक़्त के क़ाज़िय्युल कुज़ात हज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने कहा, “अल्लाह पाक पारह 15 सूरए बनी इसराईल की आयत नम्बर 70 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ﴾  
 तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने औलादे आदम को इज़्ज़त दी।

(प 15, बनी इसराईल: 70)

ऐ ख़लीफ़ा ! इस आयते करीमा की तफ़सीर में आप के दादा जान हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, “हम ने उन के लिये उंगलियां बनाईं जिन से वोह खाना खाते हैं” तो उस ने उन चमचों को तर्क कर के उंगलियों से खाया।

(المواهب اللدنية للماجوري، ص 114)

### चम्मच से कब खा सकते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर गिज़ा ही ऐसी है मसलन फ़िरनी या रक़ीक़ (या'नी पतली) दही वग़ैरा कि उंगलियों से खाई नहीं जा सकती और पी भी नहीं सकते या हाथ में ज़ख़्म है या हाथ मैले हैं और धोने के लिये पानी मुयस्सर नहीं। तो फिर ज़रूरतन चमचे की इजाज़त है। इसी तरह गोश्त का पका हुवा बड़ा टुकड़ा या रान वग़ैरा को छुरी से काट कर खाने की भी इजाज़त है।

### APENDIX का इलाज हो गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने की सुन्नतें अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करने के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। मुआशारे के कई बिगड़े हुए अफ़राद दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से رَحِمْتُ لِلَّهِ राहे रास्त पर आ चुके हैं। चुनान्वे मथुरा (हिन्द) के एक

इस्लामी भाई दीनी माहोल में आने से पहले एक मोडर्न नौ जवान थे, फ़िल्में ड्रामे देखना उन का मशग़ला था, उन्होंने ने मक़तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयान की केसीट “T.V. की तबाह कारियां” सुनने का शरफ़ हासिल किया जिस ने उन की काया पलट दी और वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से मुन्सलिक हो गए। (एक बार) उन्हें APENDIX की बीमारी हो गई और डॉक्टर ने ओपरेशन का मश्वरा दिया। वोह घबरा गए, ऐसे में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में जिन्दगी में पहली बार आशिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। ﷺ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से बिग़ैर ओपरेशन के उन का मरज़ जाता रहा। ﷺ उन के ज़ब्बे को मदीने के 12 चांद लग गए, अब वोह हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल करते, हर माह 72 नेक आ'माल का रिसाला जम्अ करवाते और मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज़्र के लिये जगाने की ख़ातिर घूम फिर कर सदाए मदीना लगाते हैं।

बे अमल बा अमल बनते हैं सर बसर

तू भी ऐ भाई कर क़ाफ़िले में सफ़र

अच्छी सोहबत से ठन्डा हो तेरा जिगर

काश! कर ले अगर क़ाफ़िले में सफ़र

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

### बिग़ैर बेहोशी के ओपरेशन

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की कैसी बरकतें हैं। येह याद रखिये ! बीमारी और मुसीबत मुसल्मान के लिये आ़म तौर पर बाइसे रहमत होती है, अभी आप ने सुना कि इस्लामी भाई को एपेन्डिक्स की तक्लीफ़ हुई फिर शिफ़ा का सबब मदनी क़ाफ़िले का सफ़र बना



इस तरह वोह दीनी माहोल में रच बस गए और उन का दीनी माहोल में खूब पक्का हो जाना यकीनन बाइसे इस्तिहकाके रहमत है। तक्लीफ़ आए तो सब्र की कोशिश कर के खूब अज़्रो सवाब कमाना चाहिये। हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ के सब्र फ़रमाने का अन्दाज़ और उस पर सवाब व अज़्र कमाने का ज़ब्हा भी क्या खूब था !

चुनान्चे शारेहे बुख़ारी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ “नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सहीहल बुख़ारी” जिल्द 2 सफ़हा 213 ता 215 पर नक्ल करते हैं, हज़रते उर्वह رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ जिन के वालिदे गिरामी मशहूर सहाबी हवारिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते जुबैर बिन अक्वाम رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ थे और वालिदए मोहतरमा हज़रते अस्मा बन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ थीं। आप उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا के भान्जे और हज़रते अब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के सगे भाई और मदीनए मुनव्वरह के मशहूर “फुकहाए सब्आ” (या’नी सात जय्यिद उलमाए किराम) में से एक थे, आबिदो ज़ाहिद और शब ज़िन्दा दार बुजुर्ग़ थे रोज़ाना बिला नागा चौथाई कुरआने पाक मुस्हफ़ शरीफ़ से देख कर तिलावत फ़रमाते और चौथाई कुरआन शरीफ़ रात तहज्जुद में पढ़ते। ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक कहा करता था कि जिसे जन्नती को देखना हो वोह हज़रते उर्वह رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ को देखे। एक बार सफ़र कर के वलीद बिन अब्दुल मलिक के यहां तशरीफ़ ले गए थे। आप رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ के क़दम मुबारक में आकिला हो गया, येह वोह बीमारी है जो उज़्व को सड़ा देती है चुनान्चे वलीद ने मश्वरा दिया कि अमले जराहत (ओपेरेशन) करवा लीजिये। आप رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ राज़ी न हुए, मगर मरज़ पिंडली तक बढ़ गया। वलीद ने अर्ज़ की, अलीजाह ! अब तो पांव कटवाना ज़रूरी है वरना येह मरज़

सारे जिस्म में सरायत कर जाएगा। आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ राजी हो गए। चुनान्चे तबीब आया, उस ने कहा, शराब पी लीजिये ताकि कटने में तकलीफ़ का एहसास न हो। फ़रमाया, **अल्लाह** की ह़राम कर्दा चीज़ के ज़रीए मुझे अफ़ियत नहीं चाहिये। अर्ज़ की, इजाज़त हो तो कोई ख़्वाब आवर दवा दे दूँ। फ़रमाया, मैं नहीं चाहता कि कोई उज़्व काटा जाए और मुझे तकलीफ़ का एहसास न हो और तकलीफ़ और सब के ज़रीए मिलने वाले अज़्र से मैं महरूम रह जाऊँ। अर्ज़ की गई, अच्छा, कुछ लोगों को इजाज़त दीजिये कि आप को पकड़े रहें। फ़रमाया, इस की भी ज़रूरत नहीं। बिल आख़िर पहले पाउं का गोश्त छुरी से और फिर हड्डी आरी से काटी गई मगर आप का सब्रो तहम्मूल मरहबा ! ज़बान से आह ! तक न की, मुसल्लसल ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रहे, हत्ता कि जब लोहे के चमचों के ज़रीए ज़ैतून शरीफ़ के खौलते हुए तेल से ज़ख़्म को दागा गया तो शिद्दते दर्द के सबब बेहोश हो गए, जब होश में आए तो चेहरए मुबारका से पसीना पोंछने लगे और कटा हुआ पाउं मुबारक हाथ में ले कर उलट पलट करते हुए फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिस ने मुझे तुज़ पर सुवार फ़रमाया, मैं तेरे ज़रीए कभी किसी गुनाह की तरफ़ नहीं गया। जराहत (ओपरेशन) की तमाम कारवाई इस तरह हुई कि वलीद बातों में मसरूफ़ था उसे ख़बर तक न हुई जब दाग़ने की बू फैली तब मा'लूम हुआ।

### शहज़ादे की शहादत

इस सफ़र में हज़रते उर्वह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का दूसरा इम्तिहान येह हुआ कि आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के शहज़ादे हज़रते मुहम्मद बिन उर्वह رَضِيَ اللهُ عَنْهَا वलीद के अस्तबल में तशरीफ़ ले गए तो किसी चौपाए ने मार कर शहीद कर दिया। जब मदीनाए मुनव्वरह वापसी हुई तो पारह 15 सूरतुल कहफ़ की आयत नम्बर 62

का येह हिस्सा तिलावत किया : ﴿لَقَدْ لَوِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۝﴾ तरजमए कन्जुल ईमान : बेशक हमें अपने इस सफर में बड़ी मशक्कत का सामना हुवा । (62:अल्हफ:15,प)

## हज़रते उर्वह रَضِيَ اللهُ عَنْهُ की सखावत

हज़रते उर्वह रَضِيَ اللهُ عَنْهُ के जूदो सखावत का येह आलम था कि जब बाग़ में फल पक कर तय्यार हो जाते तो इहाते की दीवार में शिगाफ़ फ़रमा देते लोग आ कर खाते और बांध कर ले भी जाते । आप रَضِيَ اللهُ عَنْهُ जब अपने बाग़ में तशरीफ़ ले जाते तो पारह 15 सूरतुल कहफ़ की आयत नम्बर 39 का येह हिस्सा विदे ज़बान होता : ﴿وَلَوْلَا إِدْخَالَتْ جَنَّاتُكَ فُلْتُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۝﴾ तरजमए कन्जुल ईमान : और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का । (39:अल्हफ:15,प)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

## टेक लगा कर खाना सुन्नत नहीं है

सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खुश गवार है, “मैं तक्या (या'नी टेक) लगा कर नहीं खाता ।”

(کنز العمال، 15/102، حدیث: 40704)

## टेक लगा कर मत खाओ

हज़रते अबुहर्दा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूरे अकरम صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “तुम टेक लगा कर खाना मत खाओ ।”

(مجمع الزوائد، 22/5، حدیث: 7918)

## टेक लगा कर खाने की चार सूरतें

खाते वक़्त तक्या (या'नी टेक) लगाने की चार सूरतें हैं : **❀1** एक पहलू ज़मीन की तरफ़ कर के (या'नी दाएं या बाएं झुके हुए) बैठना **❀2** चार जानू

(या'नी चौकड़ी मार कर) बैठना ﴿3﴾ एक हाथ ज़मीन पर रख कर (उस पर) टेक लगा कर बैठना ﴿4﴾ दीवार (या कुर्सी की पुश्त) वगैरा से टेक लगा कर बैठना। यह चारों सूरतें मुनासिब नहीं। दो ज़ानू या उकडूँ (या'नी दोनों घुटने खड़े कर के) बैठ कर खाना अच्छा है, तिब्बी लिहाज़ से भी मुफ़ीद है। खड़े हो कर खाना अच्छा नहीं।

(मिरआतुन मनाजीह, 6/12)

## रोटी का एहतिराम करो

गिरी हुई रोटी उठा कर खा लेना सुन्नत है चुनान्वे उम्मुल मुअमिनीन हज़रते अ़इशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं, “सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मकाने आलीशान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुवा देखा तो उस को ले कर पोंछा फिर खा लिया और फ़रमाया, “अ़इशा ! (رَضِيَ اللهُ عَنْهَا) अच्छी चीज़ का एहतिराम करो कि येह चीज़ (या'नी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई।”

(ابن ماجه، 4/50، حديث: 3353)

## खाने के इसराफ़ से तौबा कीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आजकल हर एक बे बरकती और तंगदस्ती का रोना रो रहा है। क्या बईद कि रोटी का एहतिराम न करने की येह सज़ा हो। आज शायद ही कोई मुसल्मान ऐसा हो, जो रोटी ज़ाएअ़ न करता हो। हर तरफ़ खाने की बे हुरमती के दिलसोज़ नज़ज़ारे हैं, शादी की तक्रीबात हों या बुजुगानि दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ की नियाज़ के तबरूकात। अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! दस्तर ख़ानों और दरियों पर बे दर्दी के साथ खाना गिराया जाता है, खाने के दौरान हड्डियों के साथ बोटी और मसालहा बराबर साफ़ नहीं किया जाता, गर्म मसालहे के साथ भी खाने के कसीर अज्ज़ा ज़ाएअ़ कर दिये जाते हैं,

थालों में बचा हुआ थोड़ा सा खाना और पियालों, पतिलियों में बचा हुआ शोरबा दोबारा इस्ति'माल करने का अक्सर लोगों का ज़ेहन नहीं, इस तरह का बहुत सारा बचा हुआ खाना उमूमन कचरा कूंडी की नज़र कर दिया जाता है। अब तक जितना भी इसराफ़ किया है बराए मेहरबानी ! उस से तौबा कर लीजिये। आयिन्दा खाने के एक भी दाने और शोरबे के एक भी क़तरे का इसराफ़ न हो इस का अहद कर लीजिये। **وَاللّٰهُ الْعَظِيْمُ !** क़ियामत में ज़र्रे ज़र्रे का हिसाब होना है, यकीनन कोई भी क़ियामत के हिसाब की ताब नहीं रखता, तौबा सच्ची तौबा कर लीजिये। दुरूदे पाक पढ़ कर अर्ज़ कीजिये : **या अल्लाह पाक !** आज तक मैं ने जितना भी इसराफ़ किया उस से और तमाम सगीरा व कबीरा गुनाहों से तौबा करता हूँ और तेरी अज़ा कर्दा तौफीक़ से आयिन्दा गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा, या रब्बे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मुझे बे हिसाब बख़्श दे।

أَمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**सदका प्यारे की हया का कि न ले मुझ से हिसाब बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है**

(हदाइके बख़्शाश)

पारह 8 सूरतुल आ'राफ़ आयत नम्बर 31 में अल्लाह रब्बुल आलमीन का फ़रमाने आलीशान है : ﴿كُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो और हद से न बढ़ो, बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

(प, 8, الاعراف: 31)

मुफ़रिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार खान रज़्ज़े अल्ले एहिने तफ़सीरे नईमी जिल्द 8 सफ़हा 390 पर फ़रमाते हैं, इसराफ़ की बहुत तफ़सीरें हैं **1** हलाल चीज़ों को हराम जानना **2** हराम चीज़ों को इस्ति'माल करना **3** ज़रूरत से ज़ियादा खाना पीना या पहनना **4** जो दिल चाहे वोह

खा पी लेना पहन लेना ﴿5﴾ दिन रात में बार बार खाते पीते रहना जिस से मे'दा ख़राब हो जाए, बीमार पड़ जाए ﴿6﴾ मुज़िर और नुक़सान देह चीज़ें खाना पीना ﴿7﴾ हर वक़्त खाने पीने पहनने के खयाल में रहना कि अब क्या खाऊंगा आयिन्दा क्या पियूंगा (154/3, त्फ़ीर روح البیان) ﴿8﴾ ग़फ़लत के लिये खाना ﴿9﴾ गुनाह करने के लिये खाना ﴿10﴾ अच्छे खाने पीने, आ'ला पहनने का आदी बन जाना कि कभी मा'मूली चीज़ खा पी न सके ﴿11﴾ आ'ला ग़िज़ाओं को अपने कमाल का नतीजा जानना । गरज़े कि इस एक लफ़ज़ में बहुत से अहक़ाम दाख़िल हैं । हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “हर दम शिकम सैर रहने से बचो कि येह बदन को बीमार, मे'दे को ख़राब और नमाज़ से सुस्त करता है, खाने पीने में मियाना रवी इख़्तियार करो कि येह सदहा बीमारियों का इलाज है । अल्लाह पाक मोटे शख़्स<sup>(1)</sup> को ना पसन्द करता है, (كشف الخفاء، 1/221، حدیث: 760) जो शख़्स शहवत (या'नी ख़्वाहिश) को अपने दीन पर ग़ालिब करे वोह हलाक हो जाएगा । (163/4, त्फ़ीर روح المعانی، तफ़्सीरे नईमी, जि. 8, स. 390)

## दुबले आदमी की फ़ज़ीलत

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** खाना कम खाने के साथ साथ बिल खुसूस मैदा, मिठास व चिकनाहट और इस की बनावटों के इस्ति'माल में (तबीब के मश्वरे के मुताबिक़) कमी रखने से बदन के वज़न में कमी आती, उभरा हुवा पेट अस्ली हालत पर आता और आदमी खुश अन्दाम (या'नी SMART) रहता है ।<sup>(2)</sup> कम खाने वाले हलके बदन वाले **मुसल्मान** को खुदाए रहमान पसन्द फ़रमाता

1 ... मोटापे की वजह से किसी मुसल्मान पर हंस कर छेड़ कर दिल दुखाना गुना है ।

2 ... बदन का वज़न कम करने का तरीका मा'लूम करने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब “पेट का कुफ़्ले मदीना” सफ़हा 76 ता 79 मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये ।

है चुनान्चे हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “अल्लाह पाक को तुम में सब से ज़ियादा वोह बन्दा पसन्द है जो कम खाने वाला और ख़फ़ीफ़ (या'नी हलके) बदन वाला है।” (جامع صغیر، ص 20، حدیث: 221)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अमल का ज़ब्बा बढ़ाने के लिये **दीनी माहोल** ज़रूरी है, वरना आरिज़ी तौर पर ज़ब्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोहबत के फुक़दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़्ामत नहीं मिल पाती। लिहाज़ा **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत हासिल करने के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। **دا 'वते इस्लामी** की बरकत से हर तरफ़ सुन्नतों की धूमधाम है।

## लोगों से शरमा कर सुन्नत तर्क नहीं की जाती !

**हमारे** सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ, आकाए नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्वत में गुम रहा करते थे। दुन्या की कोई कशिश और बे वफ़ा मुआशरे की कोई झूठी “मुरव्वत” उन से सुन्नत न छुड़ा सकती थी। चुनान्चे हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِيَ اللهُ عَنْهُ (जो कि वहां मुसलमानों के सरदार थे) खाना खा रहे थे कि उन के हाथ से लुक़मा गिर गया, उन्होंने ने उठा लिया और साफ़ कर के खा लिया। यह देख कर गंवारों ने आंखों से एक दूसरे को इशारा किया (कि कितनी अज़ीब बात है, कि गिरे हुए लुक़मे को उन्होंने ने खा लिया) किसी ने आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से कहा, “अल्लाह पाक अमीर का भला करे, ऐ हमारे सरदार ! यह गंवार तिरछी निगाहों से इशारा करते हैं कि अमीर साहिब رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने गिरा हुवा लुक़मा खा लिया हालां कि इन के सामने यह खाना मौजूद है।” उन्होंने ने फ़रमाया, “इन

अजमिय्यों की वजह से मैं उस चीज़ को नहीं छोड़ सकता जिसे मैं ने, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना है। हम एक दूसरे को हुक्म देते थे कि लुक़्मा गिर जाए तो उसे साफ़ कर के खा लिया जाए, शैतान के लिये न छोड़ा जाए।”

(अबुन माजि, 4/17, حدیث: 3278)

रूहे इमां मग्जे कुरआं जाने दीं हस्त हुब्बे रहमतुल्लिल आलमों

## ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये

**घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? जलीलुल क़द्र सहाबी और मुसल्मानों के सरदार मा'क़िल बिन यसार رَضِيَ اللهُ عَنْهُ सुन्नतों से किस क़दर घ्यार करते थे। आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अजमिय्यों के इशारों की ज़र्ज़ा बराबर परवा न की और बे धड़क सुन्नतों पर अमल जारी रखा। और आज बा'जू नादान मुसल्मान ऐसे भी हैं कि “मोर्डन माहोल” में दाढ़ी मुबारक जैसी अज़ीमुशशान सुन्नत के तर्क को مَعَادَ اللهِ “हिक्मते अमली” तसव्वुर करते हैं। हक़ीकी हिक्मते अमली येही है कि लाख बुरा माहोल हो, अग्यार का ज़ोर हो, बद मज़हबों का शोर हो, कुछ ही हो आप दाढ़ी शरीफ़, इमामा पाक और सुन्नतों भरे सादा लिबास में मल्बूस रहिये, खाने पीने और रोज़मर्रा के मा'मूलात में सुन्नतों का दामन थामे रहिये, लोगों की इस्लाह के लिये इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखिये, اِنْ شَاءَ اللهُ चराग़ से चराग़ जलता चला जाएगा, हक़ का बोलबाला होगा, शैतान का मुंह काला होगा, हर तरफ़ सुन्नतों का उजाला होगा। दौलते दुन्या का हर आशिक़, मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मतवाला होगा। اِنْ شَاءَ اللهُ घर घर नूरे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का उजाला होगा।

ख़ाक़ सूरज से अधेरों का इज़ाला होगा आप आएं तो मेरे घर में उजाला होगा  
होगा सैराब सरे कौसरो तस्नीम वोही जिस के हाथों में मदीने का पियाला होगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



## औलाद को कम अक्ली से बचाने का नुस्खा

अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खैरिय्यत निशान है, “जो शख्स दस्तर ख़्वान से खाने के गिरे हुए टुकड़ों को उठा कर खाए वोह फ़राखी की जिन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद कम अक्ली से महफूज़ रहती है।” (کنز العمال، 111/15، حدیث: 40815)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

### तंगदस्ती का इलाज

ज़बर दस्त मुहद्दिस हज़रते हुदबा बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को ख़लीफ़ए बग़दाद मामून रशीद ने अपने हां मद्ऊ किया, त़अम के आख़िर में खाने के जो दाने वगैरा गिर गए थे, मुहद्दिसे मौसूफ़ चुन चुन कर तनावुल फ़रमाने लगे। मामून ने हैरान हो कर कहा, ऐ शैख़ ! क्या आप का अभी तक पेट नहीं भरा ? फ़रमाया, क्यूं नहीं ! दर अस्ल बात येह है कि मुझ से हज़रते हम्माद बिन सलमा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने एक हदीस बयान फ़रमाई है, “जो शख्स दस्तर ख़्वान के नीचे गिरे हुए टुकड़ों को चुन चुन कर खाएगा वोह तंगदस्ती से बे ख़ौफ़ हो जाएगा।” मैं इसी हदीसे मुबारक पर अमल कर रहा हूँ। येह सुन कर मामून बेहद मुतअस्सिर हुवा और अपने एक ख़ादिम की तरफ़ इशारा किया तो वोह एक हज़ार दीनार रूमाल में बांध कर लाया। मामून ने उस को हज़रते हुदबा बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की ख़िदमत में बतौरै नज़राना पेश कर दिया। हज़रते हुदबा बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ हदीसे मुबारका पर अमल की हाथों हाथ बरकत जाहिर हो गई। (ثمرات الاوراق، 8/1)

### शरमा कर सुन्नतें मत छोड़िये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ सुन्नतों पर अमल के मुआमले में दुन्या के बड़े से बड़े रईस

बल्कि बादशाह की भी परवा नहीं करते। इस हिकायत से हमारे उन इस्लामी भाइयों को दर्स हासिल करना चाहिये जो लोगों की मुरव्वत की वजह से खाने पीने की सुन्नतें तर्क कर दिया करते हैं, नीज़ दाढ़ी शरीफ़ और इमामए मुबारका के ताजे इज़्ज़त को सर पर सजाने से कतरा जाते हैं। यकीनन सुन्नत पर अमल करना दोनों जहां में बाइसे सआदत है, कभी कभी दुन्या में हाथों हाथ भी इस की बरकतें जाहिर हो जाती हैं जैसा कि हज़रते हुदबा बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को शाही दरबार में सुन्नत पर अमल करने की बरकत से एक हज़ार दीनार मिल गए और आप मालदार हो गए।

जो अपने दिल के गुलदस्ते में सुन्नत को सजाते हैं

वोह बेशक रहमतें दोनों जहां में हक़ से पाते हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

### फ़ेहरिस

रोटी का एहतिराम.....1	टेक लगा कर मत खाओ.....10
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत .....1	टेक लगा कर खाने की चार सूरतें.....10
मुख़्तलिफ़ खजूरों का थाल.....1	रोटी का एहतिराम करो.....10
पांच उंगलियों से खाना गंवारों का तरीका है...1	खाने के इसराफ़ से तौबा कीजिये.....10
शैतान के खाने का तरीका.....1	दुबले आदमी की फ़ज़ीलत.....10
तीन उंगलियों से खाने का तरीका.....1	लोगों से शरमा कर सुन्नत तर्क नहीं
चमचे के साथ खाने की हिकायत.....1	की जाती !.....10
चम्मच से कब खा सकते हैं.....1	ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये.....10
APENDIX का इलाज हो गया.....1	औलाद को कम अक्ली से
बिगैर बेहोशी के ओपरेशन.....1	बचाने का नुस्खा.....10
शहज़ादे की शहादत.....1	तंगदस्ती का इलाज.....10
हज़रते उर्वह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की सखावत.....10	शरमा कर सुन्नतें मत छोड़िये.....10
टेक लगा कर खाना सुन्नत नहीं है.....10	फ़ेहरिस.....10

अगले हफ़्ते का रिसाला

